Management of Insect-Pest and Diseases of Juniper: A One Day Training Conducted at Reckongpeo, Kinnaur (10.03.2016)

For the benefit of farmers and frontline staff of Kinnaur Forest Division, **Himalayan Forest Research Institute, Shimla** organized a one day training programme on the **"Management of Insect Pest and diseases of Juniper"** at Reckongpeo, District Kinnaur on 10.03.2016. The training was attended by around 40 farmers & frontline staff of Kinnaur Forest Division, Himachal Pradesh. **Dr. Pawan Kumar**, Scientist, HFRI, Shimla and Coordinator of the said training at the outset welcomed the Chief Guest Sh. Angel Chauhan, DFO Kinnaur and participants. Sh. Angel Chauhan, while inaugurating the training addressed the gathering on issues and concerns related to Juniper regeneration and socio-economic importance of Juniper species in Distt. Kinnaur. He also emphasized that Juniper wood is used by the local people in fuel, religious ceremonies as far as Distt. Kinnaur and other tribal areas are concerned. He also shared other details, relevant to its uses. Dr. Ashwani Tapwal, Scientist, HFRI, Shimla stressed on effective disease management of Juniper seeds during nursery raising and delivered talk on **'Diseases of conifers with emphasis on Juniper and their eco-friendly management'**. Dr. Pawan Kumar, Scientist highlighted the research and extension activities of HFRI besides, he also delivered the talk on **Management of Insect pests of stored seeds and Nursery of *Juniperus polycarpos.*** Sh. Pitamber Singh Negi, Scientist, HFRI, Shimla highlighted the issue of breaking dormancy of Juniper seeds during Nursery development - the breakthrough developed by HFRI, Shimla and shared his research experinces on **'Seed technology and artificial regeneration technique of *Juniperus polycarpos* C. Koch (Himalayan pencil Cedar)'**. Sh. Pitamber Singh Negi, also presented his research work on Talispatra **(*Abies spectabilis)*** - an important high level conifer species of western Himalayas while delivering his talk on **'Distribution and seed studies in *Abies spectabilis.*** During Interactive session DFO, Kinnaur, participants and Scientists of HFRI, Shimla discussed various related issues and suggested suitable measures to tackle the problem of Juniper Species. At the culmination of the training programme, Dr. Pawan Kumar thanked DFO Kinnaur, all participants and resource persons and assured to conduct such training programmes in near future too.

Glimpses of the Training

जिला किन्नौर (हिमाचल प्रदेश) के राज्य वन विभाग के कर्मच
किसानों के लिए
'जूनिपर के रोग एवं परोपजीवी कीटों का प्रबन
एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम
दिनांक : मार्च 10, 2016
स्थान: रिकांग पिओ, किन्नौर (हिमाचल
आयोजक: हिमालयन वन अनुसंधान संस्था
पंथाघाटी, शिमला-171013 (हिमाचल प्रदेश)

जिला किन्नौर हिमाचल प्रदेश के राज्य वन विभाग के कर्मचारी व
किसानों के लिए
'जूनिपर के रोग एवं परोपजीवी कीटों का प्रबन्धन'
एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम
दिनांक : मार्च 10, 2016
स्थान: रिकांग पिओ, किन्नौर (हिमाचल प्रदेश)
आयोजक: हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान

पहाड़ों से खत्म हो रहे जुनिपर प्रजाति के पौधे, नहीं हुई इसे बचाने की कोशिश, धार्मिक अनुष्ठान के लिए टहनियों के साथ बेतरतीब ढंग से तोड़ लिए जाते हैं ये पौधे

पेंसिल बनाने वाले हिमाचली पौधे जुनिपर का अस्तित्व खतरे में

अमर उजाला ब्यूरो

रिकांगपिओ (किन्नौर)। हिमालय की बर्फीली वादियों में उगने वाले एक महत्वपूर्ण पौधे जुनिपर का अस्तित्व खतरे में है। इस पौधे से कभी पेंसिलें बनाई जाती थीं। इस पौधे से दवाएं बनती हैं। इसकी खुशबूदार पत्तियां धार्मिक अनुष्ठानों में धूप के तौर पर जलाई जाती हैं।

ये पौधे अब तक जंगलों में खुद उगते थे। इसलिए इसे बचाने की कोशिश नहीं हुई। अब इस प्रजाति के पौधे पहाड़ों से खत्म हो रहे हैं। इसे बचाने को शिमला का हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान सामने आया है। वह जगह-जगह कार्यशालाएं कर किसानों और वन विभाग के कर्मचारियों को बता रहा है कि इस दुर्लभ पौधे को कैसे बचाया जाए।

वीरवार को रिकांगपिओ में कार्यशाला हुई। वनमंडलाधिकारी एंजल चौहान ने बताया कि कुछ सालों से जुनिपर के पौधों पर कीट और अन्य रोग लगातार देखने को मिल रहे हैं। इससे इन पौधों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। धार्मिक अनुष्ठान के लिए इस पौधे की पत्तियों को बेतरतीब ढंग से टहनी के साथ तोड़ लिया जाता है। इससे न तो फूल बचते हैं और न ही बीज। शिमला के वैज्ञानिक एवं कार्यशाला के समन्वयक डा. पवन राणा ने बताया कि इसकी लकड़ी मुलायम होती है। इसे आसानी से छीला जा सकता था। इसलिए इसका इस्तेमाल पेंसिल बनाने के लिए होता रहा है। अब इस दुर्लभ पौधे को बचाने के लिए इसके व्यापार पर रोक लगा दी गई है। दिक्कत यह है कि किसान इसके पौधे लगाने का अपनी तरफ से प्रयत्न नहीं कर रहे, जो ठीक नहीं। कार्यशाला में बताया जा रहा है कि कैसे इन पौधों के बीज को रोपें और उसकी देखभाल करें। उसे रोगों से बचाएं। संस्थान ने जुनिपर के पौधों पर शोध किया है। कहा कि संस्थान इस पौधे को कीट तथा रोगों से बचाने के लिए कुछ साल से शोध कार्य कर रहा है। इन पौधों को संक्रमण से बचाने की तकनीक भी तैयार की है। इसे आम लोगों तक इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रमों से पहुंचाया जा रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डा. अश्वनी तपवाल ने जुनिपर तथा अन्य शंकुधारी पेड़ों में लगने वाले विभिन्न रोगों एवं उनके पर्यावरण हितैषी वैज्ञानिक प्रबंधन तरीकों की जानकारी दी। वैज्ञानिक पीतांबर सिंह नेगी ने प्रशिक्षुओं को जुनिपर की बीज तकनीक तथा उसके कृत्रिम पुनर्जनन तकनीक के बारे में बताया। कार्यशाला में लगभग 35 किसानों तथा वन विभाग के कर्मचारियों के हिस्सा लिया।

- हिमला का हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान वर्कशॉप लगा कर रहा लोगों को जागरूक
- रिकांगपिओ में कार्यशाला लगा किसानों को बताया कैसे करेंगे इस पौधे की देखभाल
- दुर्लभ प्रजाति के इस पौधे को बचाने के लिए इसके व्यापार पर भी लगा दी गई है रोक

एक अप्रैल से अनुबंध शिक्षकों को नियमित करने का आश्वासन

शिमला। प्रदेश राजकीय अध्यापक संघ का प्रतिनिधि मंडल वीरवार को प्रदेशाध्यक्ष वीरेंद्र चौहान की अध्यक्षता में मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह से मिला। प्रतिनिधि मंडल ने डीए की किश्त, आईआ और अनुबंध शिक्षकों को नियमितीकरण के लिए एवं 31 मार्च में दो बार नियमितीकरण व प्रक्रिया का आभार जताया। उन्होंने सीएम को अवगत कराय कि पिछले साल शिक्षकों का नियमितीकरण 20 अगस्त को हुआ था। जोकि 1 अप्रैल के बजाए 20 अगस्त से लागू माना गया। उन्होंने सीएम से आग्रह किया कि नियमितकरण की प्रक्रिया 31 मार्च तक पूरी हो औ 1 अप्रैल से आदेश जारी किए जाएं। सीएम ने प्रतिनिधि मंडल को मांगे पूरी करने का आश्वास दिया। ब्यूरो

भारत-पाक मैच के शिफ्ट होने पर कैंडल मार्च

स्कीनिंग परीक्षाएं 16 मार्च से होंगी

जुनिपर पौधे को बचाने के लिए गया मंथन

जुनिपर पौधे रोग व उपचार पर की गई विस्तार से चर्चा, एचएफआरआई में किसानों को किया प्रशिक्षित

सिटी रिपोर्टर| शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने रिकांगपिओ, किन्नौर में किसानों व वन विभाग के कर्मचारियों के लिए जुनिपर पौधे के रोग एवं परोपजीवी कीटों का प्रबंधन नामक विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इसका मुख्य उद्देश्य जुनिपर के पौधे में लगने वाले कीटों व बीमारियों का नियंत्रण एवं प्रबंधन करना था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिला किन्नौर के लगभग 35 किसानों व वन विभाग के कर्मचारियों ने भाग लिया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थान की ओर से जुनिपर के पौधों पर किए गए शोध कार्यों पर आधारित था तथा वैज्ञानिकों ने अपने अनुभवों के आधार पर जुनिपर के प्रबंधन पर अपने व्याख्यान दिए।

प्रशिक्षण के दौरान मौजूद किसान और वैज्ञानिक सामूहिक चित्र में।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन वनमंडलाधिकारी किन्नौर एंजल चौहान ने किया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि जुनिपर का पौधा हिमालय क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण पौधा है एवं इस क्षेत्र के निवासी विभिन्न तरीकों से जैसे कि इंधन, धार्मिक प्रतिष्ठानों में, बीमारियों की रोकथाम के रूप में व पेंसिल इत्यादि बनाने में इसका उपयोग करते आ रहे हैं। परन्तु विगत कुछ वर्षों से जुनिपर के पौधों पर कीट व अन्य बीमारियां लगातार देखने को मिल रही हैं जिससे इन पौधों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है।

एचएफआरआई के वैज्ञानिक व कार्यक्रम समंवयक डा. पवन राणा ने बताया कि प्रशिक्षण एक निश्चित उद्देश्य के लिए लोगो को ज्ञान और कौशल और बढाने के लिए एक संगठित गतिविधि है। उन्होंने आगे कहा कि संस्थान ने इस पौधे को कीट व रोगों से बचाने के लिए कुछ वर्षों से शोध कार्य कर रहा है तथा इन पौधों को संक्रमणों से बचाने की तकनीक भी तैयार की है जिसे आम लोगों तक इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आयोजन करके पहुंचाया जा रहा है।

एचएफआरआई के वैज्ञानिक डा. अश्वनी तपवाल ने जुनिपर व अन्य शंकुधारी वृक्षों में लगने वाले विभिन्न रोगों एवं उनके पर्यावरण हितैषी वैज्ञानिक प्रबंधन तरीकों की जानकारी दी। वहीं वैज्ञानिक पितांबर सिंह नेगी ने प्रशिक्षुओं को जुनिपर की बीज तकनीक एवं कृमि पुनर्जनन तकनीक के बारे में अवगत कराया।